

सन् 1800 ई. → सर्वप्रथम "जॉर्ज थॉमस" ने "राजपूताना" शब्द का उपयोग किया।

सन् 1823 ई. → कर्नल जेम्स गॉड ने अपनी पुस्तक में इसका नाम 'राजधान' या 'राजस्थान' रखा।

→ सनल्स एण्ड एण्टीक्वीरीज ऑफ राजस्थान

30 मार्च 1949 → सर्वसम्मति से नाम राजस्थान रखा गया।

Note:- 1949 ई. से पूर्व राजस्थान नाम से किसी भौगोलिक इकाई का अस्तित्व नहीं था।

राजस्थान के क्षेत्रों के प्राचीनतम नाम :- मरू, धन्व, जांगल, मत्स्थ, शूरसेन आदि।

→ ऋग्वेद, महाभारत में इनका उल्लेख

(1) मरू :- आर्यों का प्राथमिक जनतंत्र

→ वर्णन :- पौराणिक ग्रन्थों, रामायण, पुराण संहिता, महाभारत एवं बृहदसंहिता

→ मरू और धन्व दोनों का अर्थ सूख ही है, और इनका प्रयोग जोधपुर के मरुस्थल के लिये हुआ है।

→ जोधपुर पहले 'मरू', फिर 'मरूवार' इसके बाद 'मारवाड़' कहा गया।

→ इसमें वर्तमान के बीकानेर, नागौर, पुर, गंगानगर, जैसलमेर, एवं बाड़मेर के कुछ भाग सम्मिलित थे।

(2) जांगल :- इस शब्द का प्रयोग उस क्षेत्र के लिये किया गया है जहाँ खमी, कैर या पीलू आदि होते हैं।

→ क्षेत्र :- वर्तमान बीकानेर, नागौर एवं जोधपुर का कुछ भाग

→ राजधानी :- अहिल्लपुर [वर्तमान नागौर]

→ पौराणिक अजुसप्र बलराम एवं श्रीकृष्ण द्वारा का जाते समय यहाँ से गुजरे थे।

(3) मत्स्थ :- ऋग्वेद में उल्लेख।

→ महाभारत काल में राजधानी विराटनगर [वैराट]

→ इसका वर्णन भीनी यात्री भुवानचर्यांग ने किया।

→ क्षेत्र :- जयपुर, अलवर, भरतपुर

(4) शूरसेन :- राजधानी → मथुरा

- क्षेत्र :- भरतपुर, धौलपुर, व करौली के अधिकतर शु-भाग
- चौथी शताब्दी ई. पू. के भूजानी लेखकों ने सिकंदर के समय में 'शूरसेन' या "सौरसेन" का उल्लेख किया।
- वर्तमान प्रशस्ति में शूरसेन नामक राजवंश का उल्लेख मिलता है।

मौर्योत्तर कालीन राजस्थान

सिकंदर के आक्रमण के पश्चात् अपनी स्वतंत्रता को सुरक्षित रखने हेतु पंजाब और तुर्क की कुछ जातियाँ राजस्थान में आकर बसी।

जैसे :- शिवि, अर्जुनायन, मालव आदि।

(1) शिवि :- क्षेत्र :- आधुनिक उदयपुर के पूर्व, पश्चिम तथा उत्तर का संभागीय प्रदेश

- शिवि जाति के आधिपत्य के कारण जनपद "शिवि जनपद" कहलाया
- राजधानी → मज्झमिका या माध्यमिका [अवशेष चित्तौड़गढ़ के पास नगरी नामक गाँव से मिले]
- अन्य नाम :- मैदपाट (मैवाड़) तथा प्राग्वट

(2) अर्जुनायन :- क्षेत्र :- अलवर - भरतपुर प्रांत

- अर्जुनायनों ने मालवों के साथ मिलकर विदेशी क्षत्रियों की हराया।

(3) मालव :- शक्ति का केन्द्र → जयपुर के निकट "नगर" नामक स्थान

- वर्तमान में "टोंक" जिले में
- बाद में ये अजमेर, टोंक, एवं मैवाड़ क्षेत्र तक फैल गए।
- टोंक, प्रतापगढ़ एवं झालावाड़ का क्षेत्र मालव देश के अन्तर्गत आता था।
- मालवों की विजय का अभिलेख नांदसा (भीलवाड़ा) में लगा है।

(4) चौधेर :- राजस्थान के उत्तरी भाग का शक्तिशाली गणतंत्रीय कबीला

- उत्तरी राजस्थान से कुषाण शक्ति को नष्ट करने का प्रयत्न
- बृहद्रथसिंह नामक ग्राम में उनके पतन की चर्चा।

→ राजस्थान के विभिन्न क्षेत्र :-

(1) मेवाड़ :- प्राचीन शिवि जनपद वाला क्षेत्र

- वर्तमान उदयपुर, चित्तौड़गढ़, प्रतापगढ़, सलुंबर, राजसमंद, भीलवाड़ा जिले के क्षेत्र
- 7वीं शताब्दी से आधुनिक राज. के निर्माण तक गुहिल-सिसोदिया की का राज
- कोली → मेवाड़ी
- राजधानी → नागदा, आहाड़, कल्याणपुर, चित्तौड़गढ़, कुम्भलगढ़, चावंड, उदयपुर

(2) वागड़ :- दो क्षेत्र वागड़ नाम से जाने जाते थे।

- (1) पिलानी के पास नरहट्ट, भादरा, नोहर तथा कनगा के क्षेत्र
- (2) दक्षिणी राजस्थान के डूंगरपुर, बांसवाड़ा का भूभाग
- वर्तमान में इसे वागट्ट या वागड़ कहा जाता है।
- कोली → वागड़ी

(3) मारवाड़ :- प्राचीन मरु प्रदेश ही मारवाड़ कहलाया

- 7वीं सदी में मंजौर (जोधपुर) क्षेत्र पर प्रतिहारों ने शासन किया।
- बाद में शहोड़ वंश का आधिपत्य हुआ।

(4) हाड़ोती :- आधुनिक बूंदी और कौरा का क्षेत्र

- प्राचीनकाल में मीणा जनजाती का आधिपत्य [बूढ़ा मीणा के नाम पर बूंदी]
- बाद में चौहान वंश की हाड़ा शाखा का शासन
- कोली → हाड़ोती

(5) डूँढ़ाड़ :- जयपुर एवं आसपास का क्षेत्र

- 12वीं सदी में कछवाह राजपूतों ने मीणा एवं लड़गुर्जरों को हराकर राजवंश की नींव रखी
- कोली → डूँढ़ाड़ी

(6) मेवात :- अलवर - भरतपुर का वह क्षेत्र जहाँ मेव शासन रहा।

- प्रसिद्ध नायक → हसन खाँ मेवाती
- राजा सांगा की ओर से नखर के विरुद्ध स्वानवा के युद्ध में लड़ते हुए वीरगति प्राप्त।

आधुनिक नाम	→	प्राचीन नाम
(1) जैसलमेर	→	माड था वल्ल
(2) जोधपुर का दक्षिण भाग	→	गुर्जरत्रा
(3) प्रतापगढ़	→	कांठल
(4) झालावाड़	→	मालवा
(5) पुरू, झुंझुनू, सीकर	→	ओखावाटी
(6) व्यावर - अजमेर	→	मेरवाड़ा

→ क्षत्रप = प्रांत का मुखिया, राज्यपाल [भारत में शक जाति के शासकों हेतु प्रयुक्त]

(7) प्रतापगढ़ - बांसवाड़ा के मध्य का भूभाग → छप्पन का मैदान
[छप्पन गांवों का समुह होने के कारण]

(8) भैंसरोड़गढ़ से विजौलिया तक का क्षेत्र → ऊपरमाल
[पठार होने के कारण]

(9) उदयपुर के आस-पास का क्षेत्र → गिरवा
[पहाड़ी होने के कारण]

इतिहास जानने के स्रोत

स्रोत :- मुख्यतः दो भागों में बांटा जाता है।

- ↳ (i) पुरातात्विक स्रोत
- (ii) साहित्यिक स्रोत

(i) पुरातात्विक स्रोत :- वे अवशेष जिनसे हमें स्थान एवं घटनाओं के सन्दर्भों में समझने में सहायता मिले।

↳ मुख्यतः - अभिलेख, मुद्रा, स्मारक, कलाकृतियाँ, उत्खनन में प्राप्त सामग्री

(ii) अभिलेख :- ये हमें शिलालेखों (पत्थर की पट्टिकाओं), पाषाण शिलाओं (पत्थर के बड़े खण्ड) स्तम्भों, भवनों, गुफाओं की दीवारों, मूर्ति-प्रतिमाओं, स्तूपों, भाटों, तालाबों, खेतों में खड़ी शिलालेखों, ताम्रपत्रों पर उत्कीर्ण किम्बदन्त मिलते हैं।

प्रमुख अभिलेख :- नगरी अभिलेख, कंसबा अभिलेख, घटियाला अभिलेख,
किराडू अभिलेख, नांदसा और तर्नाला थूप (स्तम्भ) लेख,
शमोली शिलालेख

(a) घटियाला अभिलेख :- प्रतिहारों का इतिहास जानने का स्रोत

(b) विजोर्लिमा शिलालेख :- चोहानों " " " " "

(c) चीखा का शिलालेख :- शवल स्मरसिंह के युग की जानकारी देता है।

(b) स्मारक :- स्मारकों में दूर्ग, भवन, राजप्रसाद (महल) शार्वजनिक भवन, स्नानागार,
विहार, मठ, चैत्य, स्तूप, मंदिर, शमाधि, तावड़ी, थूप आदि शामिल हैं।

(c) मुद्राएँ :- मुद्राओं पर चिह्न, भाषा, लिपि, स्म, संवत्, नाम, धातु की शुद्धता,
माप-तौल आदि अविवक्षित होते हैं।

→ आहड़, रेड्ड, बैराठ, शंगमहल, सांभर, मुसाबियाँ से प्राप्त सिक्के और मुद्राओं
से क्षत्रपों, मालव, चोहान, गुहिल आदि वंशों के बारे में जानकारी मिलती है।

(d) वर्तन और कलाकृतियाँ :- कलाकारी में वर्तनों पर चित्रण, स्तम्भों पर खुदई, किराड़ी व
गवाह (गोखड़ी) की कारीगरी

→ उत्खनन में प्राप्त मृदभाण्ड, प्वाल, शकावियाँ, धूपपात्र, दीपक आदि
→ गणेश्वर (नीम का थाना) की ताम्र संस्कृति के अवशेष
→ जोधपुरा (जयपुर) एवं जोध (भरतपुर) से प्राप्त काले एवं लाल मृदभाण्ड
→ आहड़ व गिलुण्ड से प्राप्त प्रस्तर, फलक

(e) ताम्रपत्र :- ताँबे के छोटे-बड़े पत्रों पर खोदे गये लेख

→ दान-पुण्य से सम्बन्धित होने के कारण "दानपत्र" भी कहा जाता है।

(i) साहित्यिक स्रोत :- राजस्थान के प्राचीन इतिहास को जानने में वेद-पुराण,

शमायण, महाभारत, बौद्ध एवं जैन ग्रंथों से सहायता मिलती है।

→ 12वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में - लेखक → जयनाथक, महाकाव्य → पृथ्वीराज विजय
जिसमें चोहानों की उपलब्धियों का वर्णन

- | लेखक | → पुस्तक | → विशेष |
|----------------------------------|---|--|
| (1) जयनाथक | → पृथ्वीराज विजय | → चौहानों की उपलब्धियों का वर्णन |
| (2) जयन चन्द्र शूरि | → हमीर महाकाव्य | → चौहानों के इतिहास व अलाउद्दीन खिलजी की रणभूमिों पर विजय का वर्णन |
| (3) पद्मनाभ | → कान्हड़देव प्रबंध | |
| (4) दलपत सिंह | → दलपत - विलास | → बीकानेर के दलपत सिंह |
| (5) जम्मा खिड़िया कृत " कचनिका " | | |
| (6) सूर्यमल्ल मिश्र | → वंश भास्कर | |
| (7) कविराज श्यामलदास | → वीर विनोद | |
| (8) विश्वेश्वर नाथ रेड्डी | → मारवाड़ राज्य का इतिहास | |
| (9) कर्नल जेम्स टॉड | → (1) एनाल्स एण्ड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान
(2) पश्चिम भारत की यात्रा | |
| (10) गौरीशंकर हीरानंद ओझा | → उदयपुर, जोधपुर, सिरोही, डूंगरपुर, बांसवाड़ा, प्रतापगढ़ के इतिहास ग्रन्थ | |

इतिहास का काल विभाजन :- इतिहास को तीन कालों में विभक्त किया गया है:-

- (i) प्राक् युग :- वह काल जिसके ज्ञान के लिये कोई लिखित साक्ष्य उपलब्ध नहीं है।
 ↳ मानव लेखनकला से अपरिचित था।
 ↳ कालक्रम → शृष्टि के आरम्भ से हड़प्पा सभ्यता के पूर्व तक
- (ii) आद्य युग :- वह काल जिसके लिखित साक्ष्य तो उपलब्ध हैं, किन्तु या तो वे अस्पष्ट हैं या उनकी लिपि को अभी पढ़ना सम्भव नहीं हुआ है।
 ↳ कालक्रम → हड़प्पा सभ्यता के काल से 600 ई. पू. तक
- (iii) ऐतिहासिक युग :- वह काल जिसके लिखित साक्ष्य स्पष्ट व सुपठित हैं।
 ↳ कालक्रम → 600 ई. पू. से वर्तमान तक

प्रागैतिहासिक राजस्थान (प्राक युग में राजस्थान) :-

(क)

- मानव सभ्यता का उदय नदी - धारियों में हुआ था।
- सैंकड़ों वर्ष पूर्व राजस्थान में मरुस्थल के स्थान पर समुद्र विद्यमान था।
- इस समुद्र में सरस्वती और दृषदती नदियाँ आकर मिलती थी।
- मानव सभ्यता के उद्भव के इस काल को पाषाण काल कहते हैं।
- पाषाण काल को तीन भागों में बाँटा गया है।
 - (i) पूर्व पाषाण काल
 - (ii) मध्य पाषाण काल
 - (iii) उत्तर (नव) पाषाण काल

(i) पूर्व पाषाण काल :-

- क्वार्टजाइट पत्थर के अनेक उपकरणों के आधार पर आज से लगभग दो या डेढ़ लाख वर्ष पूर्व राजस्थान में एक मानव संस्कृति होने का पता चलता है।
- 1870 ई. में सी.ए. हैबर्ट ने सर्वप्रथम जम्पुर एवं इंदरगढ़ से पत्थर की कनी पाषाणकालीन हस्तकुठार (Hand-axe) खोजी।
- सैलनकार ने आलावाड़ से इसी काल के कई उपकरण खोजे।

मुख्य उत्खननकर्ता :-

- (1) वीरेन्द्र नाथ मिश्रा [V.N. मिश्रा] → भारतीय पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग, नई दिल्ली
→ डेक्कन कॉलेज, पूना
- (2) रत्नचन्द्र अग्रवाल [R.C. अग्रवाल] → राजस्थान पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग
- (3) डॉ॰ विजय कुमार → " " " " "
- (4) हरिश्चन्द्र मिश्रा → " " " " "

→ चम्बल, बनास, व उनकी सहायक नदियों के किनारे पूर्व पाषाणकालीन उपकरण प्राप्त हुये हैं।

→ आलेख से इन उपकरणों की खोज → बी॰ आल्विन द्वारा

- (ii) मध्य पाषाण-काल :- पश्चिम राजस्थान में लूनी और उसकी सहायक नदियों, भित्तौड़ की मेड़च नदी धारी और विराटनगर से मध्य पाषाणकालीन उपकरण मिले हैं।
 - इस काल के उपकरण छोटे, हल्के, और कुशलता से निर्मित थे।

- ये उपकरण "जैस्पर, शोर्ट, चर्ट, कार्नेलियन, क्वार्ट्जाइट, कल्सेडीनी आदि पाषाणों से बने हैं।
- इन उपकरणों में ब्लेड, इग्रेवर, द्रायसंगल, फ्लेसेन्ट, ड्रेपेज, स्क्रैपर, लाइटर आदि उल्लेखनीय हैं।
- पत्थर के बने इन छोटे उपकरणों को माइक्रोलिथ [लघुपाषाण उपकरण] कहा जाता है।

(iii) उत्तर (नव) पाषाण-काल :- अजमेर, नागौर, सीकर, छुंछुनू, जयपुर, उदयपुर, पित्तौड़, जोधपुर आदि स्थानों से इस काल के उपकरण मिले हैं।

* राजस्थान में धातु काल :-

(i) ताम्रकालीन संस्कृति के प्राचीन स्थल :-

- (i) गणेश्वर (सीकर)
 - (ii) कालीबंगा (हनुमानगढ़)
 - (iii) गिरवूड (राजसमंद)
 - (iv) आहड़ व आड़ोल (उदयपुर)
 - (v) पिन्ड-पाडलिगाँ (पित्तौड़)
 - (vi) कुराड़ा (नागौर)
 - (vii) शालगिधा व घुगल (बीकानेर)
 - (viii) नन्दलालपुरा
 - (ix) किराडोल
 - (x) चीथवाड़ी
- } - जयपुर
- (xi) एलाना (जालौर)
 - (xii) बूढ़ा पुराकर (अजमेर)
 - (xiii) कोल माहोली (सवाईमाधोपुर)
 - (xiv) मलाह (भरतपुर)

लौह काल :-

- राज. में (i) नौह (भरतपुर) (ii) जौधपुरा (जयपुर) (iii) सुनरी (अंशुनर)
(iv) रैद (रोहं) आदि से लौहकालीन उपकरण व हथियार मिले हैं।
 - नौह से प्राप्त लौहे के अवशेष भारत में लौह युग के आरंभ होने की सीमा रेखा निर्धारित के महत्वपूर्ण स्रोत हैं।
 - जौधपुरा व सुनरी से लौहे की गलने की भट्टियाँ और अस्त्र-शस्त्र के व उपकरण बनाने के कारखाने के अवशेष मिले हैं।
 - रैद की लौह शमशी की प्रचुरता के कारण प्राचीन राजस्थान के "टाटानगर" की संज्ञा दी गई है।
- लौह काल के पश्चात राज. में सलेवी रंग की चित्रित मृदभाण्ड संस्कृति [Painted Grey Ware - PGW] का उदय हुआ।
- इस संस्कृति के अवशेष विराटनगर व जौधपुरा (जयपुर), सुनरी, नौह आदि स्थानों से मिले हैं।
 - इस संस्कृति का उदय 600 ई.पू. में हुआ था।

(1) कालीबंगा सभ्यता :- प्राचीन हड़प्पा और सरस्वती नदी घाटी क्षेत्र में कालीबंगा की सभ्यता विकसित हुई।

- यह हड़प्पा सभ्यता से प्राचीन सभ्यता थी। आज से 6 हजार वर्ष से अधिक प्राचीन
- यह हनुमानगढ़ जिले में पगघर नदी के किनारे स्थित है।
- इसका नाम यहाँ प्राप्त काले रंग की न्यूट्रियॉ के कारण पड़ा है।
- सर्वप्रथम 1952 ई. में अमलानन्द घोष ने इसकी खोज की।
- 1961-62 ई. में बी.बी. लाल, जी.के. थापर द्वारा यहाँ खुदाई का कार्य करवाया गया।
- खुदाई में यहाँ सिंधु - सरस्वती सभ्यता काल का एक नगर मिला जिसके सक्कनों में ईंटों का प्रयोग किया गया था।
- खुदाई में इस सभ्यता के पाँच स्तर सामने आये थे।

- प्रथम दो स्तर → हड़प्पा से प्राचीन
[याहू हड़प्पा सभ्यता]
- 3rd, 4th, 5th स्तर → हड़प्पा के समकालीन

कालीबंगा से प्राप्त अवशेष एवं उनकी विशेषता :-

- कालीबंगा सुव्यवस्थित रूप से बसा हुआ नगर था।
- मकान बनाने में मिट्टी की ईंटों को धूप में पकाकर प्रयुक्त किया जाता था।
- मिट्टी के बर्तन एवं उनके अवशेष पतले और हल्के हैं, तथा उनमें सुंदरता व सुडौलता का अभाव है।
- वर्तन लाल रंग के जिनपर काली एवं सफेद रंग की रेखाएँ खींची गई हैं।
- पुते हुए श्वेत के साक्ष्य मिले हैं। अनुमान है कि लोग एक ही श्वेत में दो फसलें उगाते थे।
- एक कंकाल की खोपड़ी में दूध : क्षिप्त मिले हैं। [मस्तिष्क शोध बीमारी के इलाज का प्रमाण]
- बस्ती के गंदे पानी के निकास के लिए यहाँ लकड़ी व ईंटों की नालियाँ बनी हुई थीं।
- यहाँ चबूतरों भी मिले हैं, जिनपर अग्निकुण्ड (वेदिकाएँ) बने हुए हैं।
[धार्मिक कार्यों की सम्भावना]
- दूसरे टीले के उत्खनन में एक दुर्ग के अवशेष मिले हैं।
- खुदाई में गाथ के मुख वाले प्याले, ताँबे के बेल, काँस के दर्पण, हाथी दाँत का कंधा, मिट्टी के बर्तन, काँच की मणि, खिलौने आदि प्राप्त हुए हैं।
- बाद में नदियों के सूखने और गरुस्थल बढ़ने से यह सभ्यता उजड़ गई।

(2) आहड़ सभ्यता :- आद्याटपुर भी कहा जाता था। [10वीं या 11वीं शताब्दी में]

(11)

- उत्खनन के पूर्व में आहड़ (बेड़च) नदी के किनारे दो टीले स्थित हैं, जिन्हें धूलकोट कहते हैं।
- यह वस्ती पहले ताम्रवती (तांबावती) के नाम से जानी जाती थी। [सम्भवतः तांबे के औजारों के निर्माण का केन्द्र होने के कारण]
- सर्वप्रथम 1953 ई. में यहाँ अक्षयकीर्ति व्यास ने उत्खनन करवाया।
- बाद में रतनचन्द्र अग्रवाल एवं स्प. डी. सांकलिभाई के निर्देशन में उत्खनन हुआ।
- यह चार हजार वर्ष पुरानी पाषाण धातु युगीन सभ्यता थी।

आहड़ से प्राप्त अवशेष एवं उनकी विशेषताएँ :-

- मकान बनाने में धूप में सुखाई गई ईंटों एवं पत्थरों का प्रयोग होता था।
- लोग अपने मृतकों को गहनों व आभूषणों के साथ दफनाते थे। [मृत्यु के बाद भी जीवन की अवधारणा]
- खुदाई में मिट्टी के बर्तन सर्वाधिक मिले हैं। जो आहड़ की लाल-काले मिट्टी के बर्तन वाली संस्कृति का प्रमुख केन्द्र सिद्ध करते हैं।
- खुदाई में ठप्पे प्राप्त हुये हैं, जो शंकाई-छपाई व्यवसाय के उन्नत होने का अनुमान है।
- मकानों की छत बाँस और कैलू से बनी होती थी।
- बड़े कमरों के बीच में बाँस की परदी पर मिट्टी चढ़ाकर उसे छोटे-छोटे कमरों (ओवरों) में विभाजित किया जाता था।
- मकानों में चार से छः खूँह मिले हैं जो संयुक्त परिवार या सामूहिक भोजन विधि के साक्ष्य हैं।
- यहाँ उच्च कौटि के चावल उत्पादित होते थे।
- आहड़ में भट्टीनुमा खूँहा मिला है [तांबा पिघलाकर बाने के अनुमान]
- आहड़वासी बर्तन बनाने की कला में दक्ष थे। यहाँ मिले लाल-भूरे मृदभाण्ड हाथ की सफाई तथा अलंकरण की दृष्टि से उत्कृष्ट थे।
- धूलकोट के 1951-52 ई. में हुए उत्खनन में त्रिशरीयाँ, दीपक, धूपदानियाँ, कटोरियाँ, मटके, कलश, चूड़ियाँ, सिलोने, 26 डिस्म के मणिमें, 6 ताँबे की मुद्राएँ, और तीन मुहरे प्राप्त हुई हैं।
- इस सभ्यता के लोग उत्तर-पूर्व और दक्षिण-पूर्व की ओर बड़े तथा गिलुण्ड व भागवानपुरा जैसे स्थान बसाए।
- अक्षयन यह सभ्यता प्राकृतिक प्रकोप से विध्वंस हुई।

(3) बालाधल :- यह सभ्यता उदयपुर जिले की बल्लभनगर तहसील के बालाधल में मिली।

- यह ताम्रपाषाण कालीन सभ्यता है, जो आहड़ संस्कृति से सम्बन्धित है।
- यहां मिश्रित अर्थव्यवस्था प्रचलित थी। कृषि, पशुपालन, शिकार तीनों जीविका के साधन थे।

बालाधल से प्राप्त अवशेष व उनकी विशेषताएं :-

- यहाँ ॥ कमरों का एक बड़ा भवन एवं दुर्ग जैसे चिह्न प्राप्त हुए हैं।
- यहां ताँबे के चाकू, कुल्हाड़ी, छेनी, काण जैसे उपकरण व कर्णफूल, गले के हार की लटकन आदि आभूषण मिले हैं।
- लौहकाल के अवशेष भी प्राप्त हुए हैं।
- लोहा गलाने की भट्टियों के चिह्न मिले हैं।
- बुना हुआ वस्त्र प्राप्त हुआ है। [कैथ के अतिरिक्त बालाधल एकमात्र स्थान]

(4) गिलूंड सभ्यता :- राजसमन्द जिले के गिलूंड कस्बे में बनास नदी के किनारे यह सभ्यता मिली।

- दो टीलों का उत्खनन किया गया था।
- यह आहड़ संस्कृति से जुड़ी सभ्यता थी।
- इसे "बनास संस्कृति" के नाम से जाना जाता है।
- 1957-58 ई में बी.बी. लाल के निर्देशन में उत्खनन किया गया।
- 1998 से 2003 ई. के मध्य पूना के डॉ. वी.एस. शिन्दे एवं पेन्सिलवेनिया विश्वविद्यालय (अमेरिका) के प्रो. ग्रेगरी पौशल के निर्देशन में उत्खनन किया गया।
- खुदाई में ताम्रयुगीन सभ्यता के अवशेष मिले हैं। [समयकाल → 1900-1700 ई. पूर्व]

गिलूंड से प्राप्त अवशेष व उनकी विशेषताएं :-

- गिलूंड से पाँच प्रकार के मिट्टी के बर्तन मिले हैं।
↳ सौदे, काले, पाँखिदार भूरे, लाल और काले चित्रित मृदभांड
- खुदाई में मिट्टी के सिलेन, पत्थर की गोलियाँ एवं हाथी दाँत की नुडियों के अवशेष मिले हैं।
- गिलूंड में पक्की ईंटों (आम में पकाई हुई ईंटें) का उपयोग प्रचुर मात्रा में हुआ है।

(5) बागौर सभ्यता :- भीलवाड़ा जिले के बागौर में कौठरी नदी तट पर यह सभ्यता

प्राप्त हुई।

- उत्खनन डॉ. वी. एन. मिश्र के निर्देशन में 1967 से 1970 ई. तक किया गया।
- यहाँ प्रागैतिहासिक काल की सभ्यता के अवशेष प्राप्त हुए हैं। जो चार से पाँच हजार ईसा पूर्व के माने जाते हैं।

बागौर सभ्यता से प्राप्त अवशेष व उनकी विशेषताएँ :-

- यही संस्था में लघु पाषाण उपकरण मिले हैं। [निवासियों के आखेट करने का सागन]
- ताँबे के उपकरण प्राप्त हुए हैं। [इसमें छेद वाली सुई सबसे महत्वपूर्ण है।]
- रुषि व पशुपालन के प्राचीनतम साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।
- बागौर मध्य पाषाण कालीन सभ्यता का स्थल और लघु पाषाण उपकरण का प्रमुख केन्द्र था।

(6) गणेश्वर सभ्यता :- गणेश्वर (नीम का थाना, सीकर) में कांतली नदी के उद्गम पर यह सभ्यता खोजी गयी।

- यह ताम्रभुगीन सभ्यता का स्थल है।
- रतनचन्द्र अग्रवाल के निर्देशन में यहाँ उत्खनन हुआ।
- यहाँ 2800 ई. पूर्व की सभ्यता के अवशेष मिले हैं।
- यह संस्कृति पूर्वी राजस्थान एवं गाँगाघाटी के क्षेत्र में पल्लवित हुई।
- गणेश्वर में ताम्र उपकरण बहुतायत में मिलते हैं। [कातल → खेतड़ी ताम्र भण्डार की निकटता]
- यह सभ्यता "ताम्र सभ्यताओं की जननी" मानी जाती है।

गणेश्वर सभ्यता से प्राप्त अवशेष व उनकी विशेषताएँ :-

- ताम्र उपकरणों में बाण, धँनियाँ, मछली पकड़ने के ढाँटे, उस्तरे के फलक, अंगुठियाँ आदि प्रमुख हैं।
- यहाँ से दोहरी पेचदार शिरावली ताम्र पिनों को पश्चिमी तथा मध्य एशिया में निर्यात किये जाने का अनुमान है।
- यहाँ से मिट्टी के दो प्रकार के बर्तन मिले हैं।
 - 1. हड़प्पा पूर्व संस्कृति के हलके लाल रंग के पतले बर्तन
 - 2. लाल चिकनी मिट्टी विशिष्ट चित्रकारी वाले मजबूत बर्तन। इन बर्तनों में मर्तबान, कलश, प्याले, तसले, ढक्कन-हाण्डी प्रमुख हैं।
- यहाँ से प्राप्त ताँबे के उपकरणों व पात्रों में 99% ताँबा है।
- यहाँ से प्राप्त मिट्टी के बर्तनों को "कृपषवणी मृदपात्र" कहते हैं, जो काले व नीले रंग से सजाये गये हैं।
- यहाँ से ताँबा हड़प्पा व मोहनजोदड़ो को भेजा जाता था।
- यह सभ्यता ताम्र पाषाण काल की थी, किन्तु ऊपरी स्तर पर लौह युग के अवशेष प्राप्त हुए हैं।

(7) बैराठ :- जयपुर जिले में स्थित बैराठ कस्बा हर भुग में सभ्यता संस्कृति का प्रमुख केन्द्र रहा है।

- इसकी कीजक की पहाड़ी और भीम डूंगरी पुरातत्व की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं।
- महाभारत में इसका उल्लेख मात्स्य जनपद की राजधानी विराटनगर के रूप में हुआ।
[पाण्डवों के अज्ञातवश के अन्तिम दिन यही व्यतीत होने की बात कही जाती है।]
- यह मौर्यकाल का भी एक प्रमुख केन्द्र था।
- यहाँ अशोक के दो स्तम्भ लेख [भाणू या बैराठ शिलालेख] प्राप्त हुये हैं।
- यहाँ बौद्धमठ के अवशेष प्राप्त हुये हैं। → अशोक के बौद्ध होने का प्रमाण

बैराठ से प्राप्त अवशेष एवं उनकी विशेषताएँ :-

- एक कमरे में 36 चाँदी की मुद्राएँ मिली हैं।
 - 8 पंचमार्क
 - 28 भारतीय भूनानी शासकों की
- सुदर्भ में स्वास्तिक तथा त्रिरत्न चक्र के चिह्न युक्त अलंकृत घड़े, दीपक, नाचता हुआ पक्षी, पत्थर की सँदूकें, लोहे की कीलें एवं हाथ से बना हुआ वस्त्र भी मिला है।
- यहाँ से एक गोल मंदिर व अशोक स्तम्भ के अवशेष प्राप्त हुए हैं।

→ दयाराम साहनी, नील रत्न बनर्जी, कैलाशनाथ दीक्षित जैसे विद्वानों ने यहाँ उत्खनन कराया।

अन्य महत्वपूर्ण प्राचीन सभ्यताएँ :-

(i) भीनमाल :- जालौर जिले की भीनमाल सभ्यता भी एक महत्वपूर्ण सभ्यता थी।

- उत्खनन → आर.सी. अग्रवाल
- इसका प्राचीन नाम भीमाल था।
- यहाँ से एक शैमन स्मैफौर (सुरापान) व भूनानी सुशही मिली है।
[व्यापार केन्द्र होने का प्रमाण]

(ii) ईसवाल :- जयपुर जिले के ईसवाल से स्थित प्राक ऐतिहासिक कालीन सभ्यता।

- समृद्ध लोहे उद्योग के साक्ष्य

(iii) शेगमहल → हनुमानगढ़

(vi) करीर → गंगानगर

(iv) ओसियाणा → भीलवाड़ा

(vii) तिलवाड़ा → बाड़मेर

(v) नगरी → चित्तौड़

(viii) जोधपुरा → जयपुर

(ix) सुनारी → सुंसुनूं

(x) नौद → भरतपुर

(xi) नगर → रोह

राजस्थान में आर्य संस्कृति का प्रसार :-

- हड़प्पा सभ्यता के पतन के बाद भारतीय इतिहास में वैदिक सभ्यता का प्रारम्भ हुआ।
[1800 ई. पू. के आसपास]
- इस सभ्यता को जानने का प्रमुख स्रोत चार वेद हैं अतः इसे वैदिक सभ्यता कहा गया।
↳ ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद
- राजस्थान में इस सभ्यता के अवशेष अनूपगढ़, तरखान वाता डेरा, पल - 64 से मिले हैं।

महाकाव्य काल :- राजस्थान में आर्यों की अनेक वस्तुस्थितों के उल्लेख मिलते हैं।

- शमशान :- राम-रावण युद्ध के समय राजस्थान के भू-भाग का वर्णन
- समुद्र सेतु निर्माण के दौरान भगवान श्री राम द्वारा लीध में अमोघास्त्र शत्रुं पर छोड़ने के स्थान पर राजस्थान की ओर चलाने का वर्णन मिलता है।
- शमशान के अनुसार जिस स्थान पर अमोघास्त्र चलाया गया वहाँ समुद्र विद्यमान था जहाँ अस्त्र के प्रभाव से मरुस्थल का निर्माण हुआ।
- वैज्ञानिक आधार पर पहले राज. में मरुस्थल के स्थान पर टैपिस समार था।
- महाभारत :- महाभारत में भी राजस्थान के आर्यों का उल्लेख हुआ है।

- इसके अनुसार राजस्थान का जांगलदेश (बीकानेर) कौरव-पाण्डव राज्य के अधीन था।
- मत्स्य राज अतका मित्र था अधीनस्थ राज्य था।
- अज्ञातवश का एक वर्ष पाण्डवों ने भेष बदलकर मत्स्य देश के शासक विराट के दरबार में व्यतीत किया था।
- महाभारत युद्ध में राजा विराट पाण्डवों की तरफ से लड़ते हुए मारे गये थे।

Note :- महाभारत के युद्ध के पश्चात् से महात्मा बुद्ध के समय तक का राजस्थान का इतिहास भी अंधकारमय है।

- कारण → इस समय के बारे में जानने के पर्याप्त पुरातात्विक व लिखित साक्ष्य प्राप्त नहीं होते हैं।
- बौद्ध ग्रन्थों के आधार पर विद्वानों के अनुसार छठी शताब्दी ई. पू. में भारतीय राजनीति के रंगमंच पर दो प्रवृत्तियाँ विशेष रूप से दिखाई देती हैं - प्रथम जनपदों का उदय और द्वितीय साम्राज्य विस्तार हेतु जनपदों के मध्य संघर्ष।

राजस्थान के जनपद :- राजस्थान में अनेक जनपदों का उदय, विकास और पतन हुआ।

- बौद्ध साहित्य (बौद्ध ग्रन्थ अंगुत्तरं निकाय) से हमें 16 महाजनपदों की सूची प्राप्त होती है।
- 16 महाजनपदों में से मत्स्य जनपद राजस्थान में स्थित था।
- राजस्थान के अनेक भाग कुरु, शूरसेन और अवन्ति महाजनपदों के अन्तर्गत थे।
- चित्तौड़ के आसपास का क्षेत्र शिवि जनपद कहलाता था।
- 325 ई. पू. में सिकन्दर के आक्रमण के दौरान पश्चिमोत्तर सीमा से "मातव, भौद्येय व आर्जुनायन कबीली राजस्थान में आकर बसे।

(1) मत्स्य जनपद :- आर्य 'जन' के रूप में मत्स्य जाति का उल्लेख सर्वप्रथम ऋग्वेद में हुआ है।

- ब्राह्मण और कौषीतकी उपनिषद् में भी मत्स्य जन का उल्लेख मिलता है।
- महाभारत में भी मत्स्य जनपद का उल्लेख है।
- अनुमान से दक्षिण में इसका विस्तार नम्बल की पहाड़ियों तक और पश्चिम में पंजाब में सरस्वती नदी के जंगलों तक था।
- इस प्रदेश में आधुनिक जयपुर, अलवर, धौलपुर, करौली व भरतपुर के कुछ भाग सम्मिलित थे।
- महाभारत काल में इस जनपद को राजा विराट था जिसने जयपुर से 85 km दूर विराटनगर (बैराठ) [वर्तमान कोटपुतली - बहारोड़ जिला] बनाकर उसे अपनी राजधानी बनाया।
- विराट की पुत्री उत्तरा का विवाह अर्जुन के बेटे अभिमन्यु से हुआ। बाद में इनके पुत्र परीक्षित पाण्डवों के राज्य का उत्तराधिकारी बना।
- मत्स्य जनपद के इतिहास के बारे में महाभारत काल के बाद अधिक जानकारी नहीं है।

डॉ० गोपीनाथ शर्मा के अनुसार :-

- महाभारत के बाद कुरु और पाण्डव जनपद निर्बल हो गये। अतः मत्स्य जनपद शक्तिशाली हो गया और राजधानी विराटनगर की समृद्धि में वृद्धि हुई।
- मत्स्य जनपद के निकट आधुनिक अलवर के कुछ भागों में शाल्व जाति रहती थी।
- अस्पष्ट सीमा को लेकर मत्स्य जनपद व शाल्व जाति के मध्य संघर्ष होता रहता था।
- शाल्वों की तरह नैदि जनपद भी मत्स्य जनपद का पड़ोसी था।
- एक समय में नैदि जनपद ने मत्स्य जनपद पर आक्रमण कर उसे अपने राज्य में मिला लिया।
- अनुमान के मुताबिक मत्स्य जनपद अधिक समय तक नैदि राज्य के अधीन नहीं रहा एवं कुछ समय पश्चात स्वतंत्र हो गया।
- कुछ समय पश्चात मगध साम्राज्य ने मत्स्य जनपद को अपने साम्राज्य में मिला लिया।
- मौर्य काल के दौरान मत्स्य जनपद मौर्य साम्राज्य के अन्तर्गत था।
- मत्स्य जनपद की राजधानी विराटनगर (बैराठ) से प्राप्त अशोक का शिलालेख और अन्य मौर्ययुगीन अवशेष इस तथ्य की पुष्टि करते हैं।